RNI-UTTHIN/2013/51284

॥ श्री:॥

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

ISSN-0975-8739

श्री जयराम आश्रम
भीमगोडा, हरिद्वार-249401
☎: (01334)-261735, फैक्स : 260334
ईमेल : jairamsandesh@gmail.com

पत्राङ्क.....JRA/LAB/09/02

दिनाङ्क.....18/08/2021

संरक्षक :
प. पू. ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी
परमाध्यक्ष
जयराम संस्थाएँ

**

परामर्शदातृ मण्डल
प्रो० वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)
डॉ० रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)
प्रो० देवी प्रसाद त्रिपाठी (हरिद्वार)
डॉ० वाचस्पति मिश्र (लखनऊ)
प्रो० हरेराम त्रिपाठी (दिल्ली)
प्रो० रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

**

सम्पादक
डॉ. शिवशंकर मिश्र
मोबाइल नं. 9456328499
shivshankarmishra74@gmail.com

**

शोधपत्र परिक्षक मण्डल
प्रो० जे. के. गोदियाल (पौड़ी)
डॉ० रामनारायण द्विवेदी (दिल्ली)
डॉ० दिनेश कुमार गर्ग (वाराणसी)
डॉ० रामविनय सिंह (देहरादून)
डॉ० रामरतन खण्डेलवाल (हरिद्वार)

**

प्रूफ संशोधक
मनमुदित नारायण शुक्ल

मान्यवर,

सादर प्रणाम!

भारतीय संस्कृति में पूर्वजन्म एवं जन्मान्तरवाद की दिव्य संकल्पना है। भगवान् के भी विविध अवतारों की विस्तार से विवेचना की गयी है। ये सभी अवतार जनमानस में अत्यन्त पूज्य एवं वन्दनीय हैं। मत्स्य, कच्छप, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध एवं कल्कि ये भगवान् विष्णु के दस अवतार माने गये हैं, जिन्हें दशावतार के नाम से अभिहित किया जाता है। जब मानव अन्याय और अधर्म के दलदल में फँस जाता है, तब भगवान विष्णु उसे समुचित रास्ता दिखाने हेतु अवतार ग्रहण करते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने स्पष्ट कहा है-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युथानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे।

अर्थात् जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब सज्जनों की रक्षा और दुष्टों के विनाश के लिए मैं विभिन्न युगों में (माया का आश्रय लेकर) उत्पन्न होता हूँ। भगवान् विष्णु के अवतारस्वरूप विभिन्न पक्षों का वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, पुरातात्विक एवं साहित्यक विश्लेषण हेतु जयराम सन्देश पत्रिका का आगामी अंक **दशावतार विशेषांक** के रूप में प्रकाशित किया जाना है।

अतः आपसे अनुरोध है कि दशावतार से सम्बन्धित शास्त्रसम्मत, सिद्धान्तानुरूप, सरलबोधगम्य, शोधपरक, सन्दर्भित आलेख दिनांक 30 अक्टूबर 2021 तक प्रकाशनार्थ प्रेषित करने का कष्ट करें।

विशेष- कृपया अपना शोधपत्र A Gautam /Krutidev10 में टाइप किया हुआ अथवा सुस्पष्ट अक्षरों में पृष्ठ के एक भाग में लिखा हुआ (लगभग 1500 शब्दों में) ई-मेल/डाक द्वारा प्रेषित करने का कष्ट करें।

(प्रो० शिवशङ्कर मिश्र)
सम्पादक-जयराम सन्देश
ISSN-0975-8739

उप-शीर्षक

1. अवतारों का मुख्य प्रयोजन
2. अवतारों के स्वरूप की वैज्ञानिकता
3. अवतारों के स्वरूप एवं लोक के साथ सामञ्जस्य
4. पूर्णावतार एवं अंशावतार का विश्लेषण
5. धर्म की स्थापना हेतु मानवेतर जाति में भगवान् के अवतार का औचित्य
6. अवतार विशेष पर प्रतिपाद्य
7. अवतारवाद का सिद्धान्त
8. अवतारों का धार्मिक, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक प्रभाव
9. अवतारों में जीवनमूल्य
10. अवतारों का समसामयिक महत्त्व
11. विश्वशान्ति एवं लोकमङ्गलकामना में अवतारों की प्रासंगिकता
12. विविध साहित्यिक विवेचना
13. अवतारों की नित्यनूतनता